RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-10
October-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

इतिहास लेखन की प्राचीन भारतीय परम्परा

डॉ0 संतोष कुमार

इतिहास विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

भारतीय सभ्यता संसार की सबसे अधिक पुरानी सभ्यता है। इसे चीनी एवं यूनानी सभ्यता की तुलना में अधिक प्राचीन स्वीकार किया जाता है। प्राचीन समय से भारत को कई बार उत्थान और पतन का सामना करना पड़ा, इसलिए प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में कई बड़े अंतराल दिखाई पड़ते हैं। फलतः प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन सरल नहीं है। समस्त उपलब्ध साक्ष्य यह प्रकट करते हैं कि भारवासियों ने इतिहास के प्रत्येक पहलू का उल्लेख अपने लेखन में किया है। फिर भी डॉ. हीरावचन्द शास्त्री जैसे विद्वानों ने भारतवासियों में ऐतिहासिक दृष्टिकोण के अभाव की ओर संकेत करते हुए लिखा है, ''प्राचीन भारतीयों के इतिहास के प्रति विशेष ध्यान नहीं दिया क्योंकि वे अतीत तथा वर्तमान के भौतिक जीवन की अपेक्षा आगामी जीवन में रूचि रखते थे।'' जबकि डॉ. गोविंदा चंद्र पाण्डेय ने इसका खण्डन करते हुए लिखा है, ''उनका (शास्त्री का) का विचार हास्यास्पद प्रतीत होता है क्योंकि भारतीयों ने जीवन को कभी भी नगण्य नहीं माना। यदि इतिहास कर्म प्रधान रहा है तो भारतवर्ष सदैव महापुरूषों की कर्मभूमि रहा है।''

निःसंदेह प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में अनेक समस्याएँ थी फिर भी प्राचीन भारतीय इतिहास लेखकों ने इस दिशा में निरंतर प्रयास जारी रखे। इतिहास लेखन के प्रति भारतीयों की अरूचि के बाद भी यहाँ पर लेखन हेतु ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध थी जिसका विद्वानों ने समय–समय पर प्रयोग किया परंतु प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन के अध्ययन के समय निम्नलिखित कठिनाइयाँ सामने आयी।

यह एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण समस्या है जिसका सामना इतिहासकार को प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के समय करना पड़ता है। ऐतिहासिक से सामग्री विभिन्न भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं है इसलिए जब कभी ऐतिहासिक सामग्री ऐसी भाषा में उपलब्ध होती कि जिसको पढ़ा नहीं जा सकता तो उस उपलब्ध सामग्री का कोई उपयोग नहीं किया जा सका। हड़प्पा लिपि को हम इसी संदर्भ में रख सकते हैं। अभी भी प्राचीन समय की कई मुहरों, ताम्रपत्रों और स्तंभों की लिखवट को पढ़ा नहीं जा सकता है। इस इस प्रकार की सामग्री का प्रयोग इतिहास लेखन में संभवन नहीं है।

प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन की एक गंभीर समस्या है। भारत एक विशाल देश है और इतिहास संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री विभिन्न स्थानों पर फैली हुई है। प्रत्येक खुदाई के अवसर पर समृद्ध ऐतिहासिक सामग्री को पाया गया है। आवश्यकता इस बात की है कि इतिहासकार धन के अभाव में सुदूर स्थानों पर बिखरी हुई सामग्री को कैसे एकत्रित करे जो भिन्न–भिन्न रूपों (जैसे ताम्रपत्र, संग्रहीत सामग्री, कविताएँ, पत्र और लोकगीत) हैं। अतः कहा जा सकता है कि ऐतिहासिक सामग्री का संग्रह अत्यंत कठिन कार्य है।

प्राचीन भारतीय इतिहासकारों ने ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन अपने ग्रंथों में किया है। साथ ही दरबारी इतिहासकारों ने भी इस दिशा में महत्वपूर्ण लेखन कार्य किया परंतु इसमें से अधिकांश सामग्री नष्ट हो गयी है। इसमें कुछ आक्रांताओं के भारत में प्रवेश से नष्ट हो गयी, कुछ को कीड़े खा गए और कुछ लेखकों के उत्तराधिकारियों ने व्यर्थ और निरर्थक समझ कर फेंक दिया क्योंकि वे उसके महत्त्व से अवगत नहीं थे। अतः नष्ट हो गई ऐतिहासिक सामग्री के अभाव में इतिहास लेखन में विद्वानों को कठिनाइयों से जूझना पड़ा। विभिन्न साक्ष्यों में शासकों के नामों में अंतर पाये जाने के कारण और वंशावली में एकरूपता न होने के कारण इतिहास के पाठकों एवं विद्वानों को निरंतर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

अभिलेख प्रक्रिया भी इतिहास के समुचित अध्ययन में एक बहुत बड़ी बाधा है। कुछ घटनाओं के आंशिक संदर्भ कुछ ऐतिहासिक सामग्री में उपलब्ध होते हैं किंतु घटना से संबंधित पूर्ण विवरण कहीं भी प्राप्त नहीं होता। अतः अभिलेख प्रक्रिया की दृष्टि से एक समस्या खड़ी हो जाती है। प्राचीन समय में महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख प्रस्तर खंडों अथवा प्रस्तर स्तंभों पर किया जाता था। यह अभिलेख की प्रक्रिया अत्यंत कठिन थी। इसमें अत्यधिक समय व श्रम व्यय होता था और घटना की पूरी व्याख्या भी संभव नहीं हो पाती थी। साथ ही संबंधित घटना की प्रतिलिपियाँ भी नहीं बनाई जा सकती थी और यदि कभी एक घटना का ब्यौरा नष्ट हो जाता था तो वह सदैव के लिए खो जाता था। इस प्रकार प्रारंभिक समय में अभियोजन की प्रक्रिया में कठोर श्रम की आवश्यकता होती थीं।

यह एक महत्वपूर्ण समस्या है जिसका इतिहासकार को सामना करना पड़ता है। प्राचीन इतिहास लेखन के मध्य लंबे अंतराल पाये जाते हैं जिनके कारण कालक्रम को निर्धारित करना अत्यंत कठिन हो जाता है। प्राचीन भारत के इतिहास में

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कई ऐतिहासिक घटनाओं के साक्ष्य तो उपलब्ध हो जाते हैं परतु घटना होने के संबंध में निश्चितता का अभाव पाया जाता है। इसी प्रकार इतिहासकारों के नामों और तिथियों के संबंध में विश्वसनीय सामग्री उपलब्ध नहीं होती है। इस समस्या का एक कारण यह हो सकता है कि अनेक शासकों ने अपने युग के तिथि क्रम को प्रारंभ किया था किंतु इतिहासकारों ने अपने लेखन के दौरान प्रचलित तिथिक्रम का उल्लेख किया है जिससे दोनों तिथियों में अंतर अत्यंत स्वाभावित हो जाता है और भ्रांति का कारण बनता है।

कई प्राचीन इतिहासकारों ने घटनाओं का उल्लेख इस प्रकार से किया है कि घटना का एक विशेष भाग उपन्यास प्रतीत होता है क्योंकि उसके प्रस्तुतिकरण में तर्क का पूर्ण अभाव पाया जाता है और वर्णन में तथ्य और कल्पना को इस प्रकार से मिश्रित कर दिया जाता है कि वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त करना अत्यंत कठिन हो जाता है कि तथ्य कहाँ समाप्त होता है और कल्पना का प्रारंभ कहाँ से है।

प्राचीन भारत में देश अनेक छोटे–छोटे भागों में विभाजित था जहाँ पर भिन्न–भिन्न राजवंश शासन करते थे। शासनकर्त्ताओं के वंशों में समय–समय पर परिवर्तन आये और कभी–कभी एक वंश ने विभिन्न सुदूर स्थित राज्यों पर शासन किया। ये सभी राजवंश निरंतर परस्पर युद्धों में संलग्न रहे। अतः प्रत्येक वंश के इतिहास का समुचित अध्ययन आवश्यक है परंतु सब वंशों, राज्यों और युद्धों का अध्ययन सरलता से संभव नहीं है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि सभी घटनाओं को तर्कपूर्ण और व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया जाये ताकि पाठक सरलता से उसे समझ सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. डॉ. पी. एस. पाठक, एंशियन्ट हिस्ओरियन्स ऑफ इण्डिया।
2. एच. फिलिप्स, हिस्टोरियन्स ऑफ इण्डिया।
3. कालिंगवुड, दि आइडिया ऑफ हिस्ट्री।
4. जी. आई. रेनियर, हिस्ट्री इट्स परपज एण्ड मेथड।
5. कार्ल आर. पापर, दि पावर्टी ऑफ हिस्टोरिज्म।
6. ए. एल. राउज, दि यूज ऑफ हिस्ट्री।
7. कार्ल जी. हैम्पवेल, फंक्शन्स ऑफ जनरल लॉज इन हिस्ट्री।

RRIJM 2015, All Rights Reserved